प्रश्न शास्त्र

रीता रानी पटियाल

प्राय: अपने कर्म का भोग करने के लिए जीव पैदा हेता है और भोग द्वारा कर्म क्षीण होने पर प्राणी अन्यत्र योनियों में क्रियमाण के प्रभाव से चला जाता है। पूर्वकृत शुभ या अशुभ किस कर्म का फलानुभव हो रहा है। यह जानने के लिए तथा इस जन्म में क्रियमाण और करिष्यमान कर्म का फल जानने कि लिए प्रश्न शास्त्र बनाया गया है। फलादेष करने के लिए दैवज्ञ के प्रश्न के समय निम्नलिखित बातों का सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिये।

1. प्रश्नकालीन समय
2. प्रश्न का स्थान (देष)
3. अपना प्रचलित स्वर
4. पृच्छक का अपने अंग को स्पर्श करना
5. भूमि चक्र के अनुसार दिशा में स्थित आरूढ़ राशि
6. पृच्छक चेष्टा
7. पृच्छक का प्रसन्न खिन्न भाव।
8. उधर्वाध दृष्टि
9. पृच्छक द्वारा पहने वस्त्रें का रंगादि।
10. तत्कालीन शकुन। प्रश्न कालीन समय का अच्छी तहर शुभ अशुभ विचार कर बृहस्पति की काल होरा आदि शुभ समय में प्रश्न पूछने के लिए निकलना चाहिये। सूर्योदय के समय वारेश होरा एक घंटे की बाद से प्रतिघंटा 6-6 ग्रह की होरा होती है।

✓ दूत और स्वर दोनों एक दिशा में हो और मृत्यु के चिन्ह दिखाई सुनाई या स्मरण में ना आवें तो रोगी जीवित रहता है।

✓ स्नान भोजन एवं शयनादि निजी क्रिया कलापों में दैवज्ञ को जैसा अनुभव

हो वैसा प्रश्नकर्ता को बताना चाहिये।

✓ दाहिनी या बायी ओर से प्रश्न करके यदि दूत पूर्व नाड़ी की ओर स्थित हो जाए तो रोगी निःसन्देह जीवित रहता है।

प्रश्नकर्ता की चेष्टा

✓ यदि प्रश्नकर्ता वक्षस्थल का स्पर्श करे तो शीघ्र इच्छित फल का लाभ

✓ मंगलिक वस्तुएं (नारियल, कुमकुम, पुष्प, सुपारी जलपूर्ण पात्र, पुस्तक आदि) का स्पर्श करे तो शीघ्र लाभ होता है। (इसके विपरीत अमंगल होगा)

✓ नाभि नासिका, मुख केश, रोम, नाखून, दांत गुप्तांग, पीठ स्तन, ग्रीवा, पेट, अनामिका अंगुली, शरीर के व छिद्र, करतल, पादतल और पर्वो अर्थात अंगुलियों के पर्व या शरीर के जोड़ का स्पर्श करते हुए प्रश्न हो तो प्रश्नकर्ता को अनिष्ट प्राप्त होता है।

भाषा शैली

✓ प्रश्नकर्ता सुनने में मधुर, शुभ, अर्थपूर्ण या स्पष्ट वाक्य कहें तो अभीष्ट सिद्धि होता है।

✓ इसके विपरीत कटु, अशुभ, अर्थहीन अस्पष्ट और अंत में विसर्ग सहित वाक्य बोले तो प्रश्नकर्ता का अभीष्ट सिद्ध नहीं होता ।

पृच्छक की चेष्टा

✓ दूत बायां पैर आगे रखे, तो शुभ दाहिना पैर आगे रखे तो अशुभ

✓ प्रश्न काल में स्थिर बैठना शुभ, पैर हिलाना अशुभ

✓ प्रश्नकर्ता उंचे स्थान में सुन्दर आसन पर सीधो-सादे ढंग से सुख पूर्वक और देवज्ञ के सामने बैठे तो शुभ होता है।

✓ पृच्छक प्रश्न करते हुए आसन से उठ खड़ा हो और फिर ना बैठे, खड़ा-2 प्रश्न करता हुआ बैठ जाए ये दोनो स्थितियां कल्याण कारक कही गई हैं।

✓ प्रश्न के समय दूत और दैवज्ञ के बीच में से कोई चला (निकल) जाए तो इच्छित में सहायता नहीं मिलती ।

✓ पृच्छक प्रसन्नचित, विनयी, कुलीन, स्पस्थ हो तो प्रश्नकर्ता को सुख मिलता है।

- ✓ प्रश्नकर्ता हाथों को हिलाता हुआ और मसलता हुआ तिरछा मुह किए बैठा हो और वह अपना प्रश्न भूल जाए तो जो वह पूछना चाहता है वह सब नष्ट हो जाता है अर्थात प्रश्न सफल नहीं होता है।
- ✓ अपने अंश या किसी अन्य पदार्थ पर जोर से प्रहार करना, हाथ या मुक्का मारना शीघ्र मृत्युदायक होता है और विनाश के लक्षण (सर्प का काटना, कुंए में गिरना, घर जल जाना आदि) का विचार देखना और सुनना मृत्युदायक है।
- ✓ लेटे हुए, खुले बाल, अपवित्र अवस्था में, रोते हुए, आने में रूकते हुए, सिर मुंडवाए हुए, नग्न, किसी वस्तु में छेद करते हुए, निन्दा करते हुए, दयनीय, घबराए हुए अग्नि में हवन सामग्री डालते हुए, दूत के हाथ पैर में बंधन होने पर, सिर और आंख मसलते हुए, दीन अवस्था में या तिनका और काष्ठ आदि तोड़ते हुए किया गया प्रश्न अषुभ ज्ल देता है।
- ✓ जुआ या ताश, चौपड़ कौड़ी आदि खेलते हुए या खेलने वालों की उपस्थिति में नाखून से लिखते हुए, बाहर निकाले जाते और अंदर आने से रोके जाते समय उबटन लगाए हुए, भस्म हड्डी, लोहा और मलिन पदार्थ धारण किए हुए, रोगग्रस्त, कपड़े से गर्दन लपेटे हुए, मलिन वेश रूखी, अनिष्ट बातें कहते हुए, प्रेतों को पिण्ड देते समय प्रश्न करना अशुभ है।
- ✓ आपरेशन थिएटर का औज़ार, खडग्, मांस, जाल भूसा, पत्ता, पंखा, खाल, सींग धाारण किए हुए, झाड़ू लिए, प्रेत, पुष्प, सूप, रस्सी लिए हुए या भूखा दैवज्ञ अथवा प्रश्नकर्ता हो तो प्रश्न पर विचार करना उचित नहीं है।
- ✓ आंखें बंद न करते हुए, पलक न गिराते हुए मांगलिक पदार्थों का ध्यान करते हुए प्रश्न पूछे तो प्रश्न पर विचार करना उचित नहीं है।
- ✓ आंखें बन्द न करते हुए, पलक न गिराते हुए मांगलिक पदार्थों का ध्यान करते हुए प्रश्न पूछे तो अभीष्ट सिद्ध होता है।

वेशभूषा

- ✓ भीगे, मैले, फटे, लाल या नीले कपड़े पहने हुए, लाल फूल धारण किए हुए प्रश्न करने से व्यक्ति व्यसन (दुख) प्राप्त करता है।
- ✓ सफेद वस्त्र, सुगन्धित, शुभ और शोभादायक अनुलेप (मेकअप) या

आभूशण पहने हुए प्रष्न करे तो उसका कल्याण होता है।

- ✓ मांगलिक पदार्थों को लिए हुए प्रश्न करने से पृच्छक का मंगल होता है।
- ✓ खाली हाथ अथवा अमंगल वस्तुओं के साथ प्रष्न करने से अमंगल होता है।

शकुनों का फल

- ✓ प्रश्न के समय जैसा कहा, सुना और देखा जाता है उसी के समान प्रश्नकर्ता को शुभ या अशुभ फल कहना चाहिये।
- ✓ जिस किसी भी कार्य से संबंधित प्रश्न या यात्रा करते हुए समय आदि उस कार्य में सहायक वस्तु को देखा जाए तो कार्य सिद्ध होता है।
- ✓ विवाह के प्रश्न के समय नई दो या अधिक वस्तुओं को एक साथ देखना शुभ है। किन्ही दो वस्तुओं का पृथक होना (अलग होना) अशुभ है।
- ✓ आंख, कान, नाक, मुंह आदि शरीर के छिद्रों में अंगुली करने, कुरेदने पर कन्या में दोष (अवगुण) कहना चाहिये।
- ✓ लिखने कल तख्ती पुस्तक अथवा पड़ने लिखने के साधन क्रधनी, कटक बालक के आभूषण, मेखला, मृगचर्ण (अजिन) दण्ड (उपवीत), गर्भिणी स्त्री, बालक दिखाई देने पर संतान प्रश्न में पुत्र प्राप्ति सूचक होते हैं।
- ✓ प्रज्जवलित अग्नि का दर्शन, शरीर के आंख कान नाक मुख आदि अंगों से मल (कीचड़, ढेर, कफ, थूक आदि) निकलना, प्रश्न स्थन से किसी का उठकर चले जाना संतान प्रश्न में गर्भपात सूचक है।
- ✓ युद्ध के प्रश्न के समय दाहिने पैर पर स्थिर करके खड़ा रहना, शस्त्र आदि चलाना, दहिना हाथ मसलना, जलती अग्नि देखना, प्रख्यात व्यक्ति अथवा प्रसन्न व्यक्ति देखना विजयदायक शकुन है।
- ✓ बांया पैर स्थिर करके खड़ा होना, आवाज़ में घबराहट, आंसू निकलना आंखों के आगे धुंधलापर होना शस्त्र को बंद करके धारण करना पराजय सूचक है।
- ✓ यात्रा के लिए जाते समय यदि स्वर्ग या फल दिखाई दे तो नि:सन्देह द्रव्य लाभ होता है।
- ✓ प्रश्न के बाद सोजाना, बैठ जाना यात्रा में विघ्न दर्शाता है। पैर फैलाना या मिलाना यात्रा में विलम्ब, पूछ कर तुरन्त उठकर चले जाना यात्रा कारक है।

- ✓ प्रश्न के समय उस स्थान पर कोई प्राणी/जीव पर बैठा हुआ अथवा लिए हुए दिखाई दे तो रोगी जीवित रहता हैं इसके विपरीत कोई जीव/प्राणी वहाँ से चला जाए तो रोगी मर जाता है।
- ✓ प्रेत-पुष्प, तिल, अग्नि, नया कपड़ा, कुशा, दही आदि समस्त श्राद्ध वस्तुएं, अंत्येष्टी में काम आने वाली वस्तुएं (समिधा, लकड़ी, जौ का आटा, घी आदि) आयु प्रश्न के समय दिखाई दे तो मृत्युदायक होते हैं।
- ✓ कोरा कपड़ा रूकी शादी हो जाती है।
- ✓ दो व्यक्तियों का परस्पर हाथ मिलाना संधि (समझौते) के लिए किसी के आगे की सूचना देता है। किसी चीज़ में छेद करना या तोड़ना समझौते में मतभेद बताता है।
- ✓ हाहाकार जैसा भयंकर शब्द पूजित वृक्ष (पीपल, वट, शमी आदि) का या ध्वजा कटना या गिर जाना, कपड़ा, छाता, जूते का फटना विध्वंस या उपद्रव का कोलाहल, क्रूर पशु पक्षियों का बोलना, दीपक बुझाना, भरे घड़े का गिरना आदि शकुन कष्ट दायक माने जाते हैं।
- ✓ बिल्ली, सांप, भालू एवं गधा आदि अशुभ जीवों का बांयी ओर दिखलाई देना गधे का शब्द सुनना विनाशकारक है। दाहिनी ओर इनका दर्शन व सुनना कष्टप्रद होते हैं।
- ✓ कोयल गधा सांप खरगोश आदि का बातचीत में उल्लेख कार्य पूर्णता प्रशस्त बतलाया है परन्तु इन्हें देखना या आवाज़ सुनना अच्छा नहीं।
- ✓ बंदर रीछ देखना, सुनना अच्छा परन्तु बातचीत में उल्लेख अशुभ होता है।

- ➢ भटका व्यक्ति, आपत्तिग्रस्त, पागल, अंधा, गूंगा बहरा, नपुंसक व्यक्ति संन्यासी और वे सब वस्तुएं जो दृष्टी और मन को रुचिकर न हों-सभी को कष्टदायक शकुन निमित्त जानना चाहिए।
- ➢ बिल्ली, गोह, छिपकली, नेवना बंदर रास्ता काट दे-बांयी ओर से दायी ओर या दांयी से वांयी ओर चले जाएं तो दोषप्रद होते हैं।
- ➢ मार्ग में सरसों, ईंधन, पत्थर, घास-फूस का आना भी दोषकारक है।

❖ मार्ग के शकुन

- ➢ खट्टे पदार्थ, मांस, शराब, शहद, घी, धुला वस्त्र, चंदन, रत्न, हाथी पक्षी, घोड़ा, राजा विद्या या धन से संपन्न व्यक्ति देवमूर्ति शुभ्र चामर,

मधुर और स्निग्ध भोजन, मुर्दा, ब्राह्मण और प्रज्वलित अग्नि मार्ग में सामने से आए तो शुभ फलदायक निमित्त शकुन मानें।

- ➢ प्रदक्षिणा क्रम बांये से बांए जाते पक्षी और पशु शुभ, विषम संख्या में हिरण शुभ, मार्ग में और प्रतिदिन प्रातः काल इनका दर्शन शुभ।
- ➢ कुत्ता, गीदड़ प्रदक्षिणा क्रम में जाते हुए अच्छे नहीं।
- ➢ नीलकंठ, गिद्द, भारद्वाज तीनों पक्षी नेवला, मेढ़ा मोर, बैल, सिंह, स्त्री-पुरूष का जोड़ा कन्या, कलष वस्तुएं शुभ फलदाय शकुन हैं।
- ➢ गीदड़, नेवला, बाघ चकोर सर्प पक्षी बांए से दांये जाते हुए और कुत्ता कौआ, बकरी, मृग हाथी बांयी ओर से दांयी ओर जाते हुए शुभ इसके विपरीत अशुभदायक होते हैं।

  रोगी के मकान में दैवज्ञ जिस दरवाजे से प्रवेश करें उसी से यदि कोई निकल जाए तो वह रोगी मर जाता है यदि उसी दरवाजे से कोई अंदर प्रवेश करे तो रोगी जीवित है।
- ➢ प्रश्न के समय हाथी, घोड़ा, बैल की आवाज, चर्चा, दर्शन प्रश्नकर्ता के अभीष्ट लाभ को दर्शाता है।
- ➢ वीणा, बांसुरी, मृदंग, शेख, पठह वाद्य विशेष का नाद, मेरी घोष, स्त्रियों का मंगल गीत, वेश्या, दही, अक्षत, ईख (गन्ना), इब, चंदन, भरा हुआ कुम्भ (कलष) पुष्प माला, फल कन्या, घष्टा, दीपक, कमल सभी शुभ फलदायक निमित्त माने हैं।
- ➢ छत्र, तोरण, सुंदर वाहन, गाड़ी, स्त्रेव, वेद धवनि, बंधा हुआ पशु, बैल, शीशा सुवर्ण, बछड़े के साथ गाय, खाने की वस्तु, खोद कर लाई गई मिट्टी और जो कुछ भी शुभ वस्तुएं दिखाई दे, सुनाई दें, सुनने और देखने में अच्छा (विचित्र) लगे प्रश्न के लिए शुभ फल की ओर इंगित करता है।

❖ निकलते समय व्यक्ति के साथ कपड़ा चला आए, हाथ में लिया छाता अथवा छड़ी गिर जाए तो अशुभ फलप्रद होता है।

- ➢ आओ, रुको, मत जाओ, अंदर आओ, कहां जा रहे हो आदि वाक्य प्रस्थान के समय बोलना सुनना निश्चित रूप से अशुभ प्रद होते हैं।
- ➢ पत्थर पर पैर फिसलना, खंबे से सिर टकराना, निकलते समय नेष्ट होता है।

- ➢ शुभ अशुभ शकुन होने पर उनके फल का अनुभव करने के लिए रुक जाना चाहिए। गन्तव्य स्थान का मार्ग भूल जाए तो भी रुकना चाहिए-ऐसा अन्य शास्त्रों में कहा गया है।
- ➢ कपास, औषधि, काले रंग के धान्य, नमक, जाल आदि हिंसा के उपयोग की वस्तु, अंगार सहित भएम, छाछ (मठ्ठा) सर्प, दुर्गन्धिपूर्ण वस्तु, मल, छर्दि उल्टी कै भूला भटका व्यक्ति, आपत्तिग्रस्त, पागल, अंधाा, गूंगा बहरा, नपुंसक व्यक्ति संन्यासी और वे सब वस्तुएं जो दृष्टी और मन को रुचिकर न हों-सभी को कष्टदायक शकुन निमित्त जानना चाहिए।
- ➢ बिल्ली, गोह, छिपकली, नेवना बंदर रास्ता काट दे-बांयी ओर से दायी ओर या दांयी से वांयी ओर चले जाएं तो दोषप्रद होते हैं।
- ➢ मार्ग में सरसों, ईंधन, पत्थर, घास-फूस का आना भी दोषकारक है।

❖ मार्ग के शकुन

- ➢ खट्टे पदार्थ, मांस, शराब, शहद, घी, धुाला वस्त्र, चंदन, रत्न, हाथी पक्षी, घोड़ा, राजा विद्या या धान से संपन्न व्यक्ति देवमूर्ति शुभ्र चामर, मधुर और स्निग्ध भोजन, मुर्दा, ब्राह्मण और प्रज्वलित अग्नि मार्ग में सामने से आए तो शुभ फलदायक निमित्त शकुन मानें।
- ➢ प्रदक्षिणा क्रम बांये से बांए जाते पक्षी और पशु शुभ, विषम संख्या में हिरण शुभ, मार्ग में और प्रतिदिन प्रातः काल इनका दर्शन शुभ।
- ➢ कुत्ता, गीदड़ प्रदक्षिणा क्रम में जाते हुए अच्छे नहीं।
- ➢ नीलकंठ, गिद्द, भारद्वाज तीनों पक्षी नेवला, मेढ़ा मोर, बैल, सिंह, स्त्री-पुरूष का जोड़ा कन्या, कलष वस्तुएं शुभ फलदाय शकुन हैं।
- ➢ गीदड़, नेवला, बाघ चकोर सर्प पक्षी बांए से दांये जाते हुए और कुत्ता कौआ, बकरी, मृग हाथी बांयी ओर से दांयी ओर जाते हुए शुभ इसके विपरीत अशुभदायक होते हैं।
- ➢ रोगी के मकान में दैवज्ञ जिस दरवाजे से प्रवेश करें उसी से यदि कोई निकल जाए तो वह रोगी मर जाता है यदि उसी दरवाजे से कोई अंदर प्रवेश करे तो रोगी जीवित रहता है।
- ➢ प्रश्न विचार करने के लिए दैवज्ञ के पृच्छक के घर में प्रवेश पर सौभाग्यवती स्त्री मूल और फल लिए निकल जाए तो संतान संपति की

हानि की सूचना देता है।

- वेदाधययन का घोष और पुण्याह वाचन का शब्द, सुरभित गंध दाहिनी और वायु का सुखद स्पर्श, अनुलोम (पृच्छक के घर की ओर अभिमुख) बैल का स्वर गौ का स्वर पृच्छक के घर में प्रवेश करते समय आरोग्य आदि शुभ फलदायक होता है।
- खड़ी हुई खाट, आसन, वाहनों का दिखाई देना, नीचे की ओर मुंह किए बर्तनों का देखना अशुभ।
- जिस रोगी के घर में बार-बार बर्तन फूटते या गिरते हों उसका जीवन दुर्लभ होता है।
- जिस रोगी के घर बिना हवा के दीपक बुझ जाए चुल्हा आदि में ईंधन होन पर अग्नि बुझ जाए वह जीवित नहीं रहता।

*****